P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-2* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्त्री विमर्श : बदलते मानदण्ड

हेमन्त कुमार निराला
प्रवक्ता,
अकार्बनिक रसायन विभाग,
काशी नरेश राजकीय पी0जी0 कालेज,
ज्ञानपुर, भदोही

मनीषा
प्रवक्ता,
गृह विज्ञान विभाग,
काशी नरेश राजकीय पी0जी0 कालेज,
ज्ञानपुर, भदोही

सारांश

वैदिक काल में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति अच्छी प्रतीत होती है परन्तु धीरे–धीरे गिरावट आती गई। जब स्त्री पुरुषों के अधीन हो गई तो उसका शोषण बढ़ता गया। वर्तमान में पाश्चात्य देशों द्वारा नारी विमर्श शुरू हुआ जिसके परिणाम स्वरूप स्त्रियों की दशा में कुछ सुधार हो रहा है।

मुख्य शब्द : यौन हिंसा, गार्हिक, परस्त्रीगमन, देहयष्टि, विभत्सता, निकृष्ट, निजात।

प्रस्तावना

किसी भी समाज की स्थापना स्त्रियों और पुरूषों के समूह से होती है। ये एक सिक्के के दो पहलू भी कहे जाते हैं। नारी–पुरूष समानता की बात भी कही जाती है। किन्तु व्यवहारिक धरातल पर देखें, तो यह कोरी गप है। आज के प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में भी नारी का अस्तित्व सुरक्षित नहीं है। कोई भी नारी न तो घर की चहारदीवारी में ही सुरक्षित है और न ही घर के बाहर। यहाँ तक कि गर्भ में भी उसका जीवन सुरक्षित नहीं रहा। आम धारणा है कि यौन हिंसा का शिकार केवल काम काजी स्त्रियाँ ही होती है, किन्तु मीडिया की सक्रियता से आज बहुत से ऐसे सच सामने आये हैं, जो यह बताते हैं कि स्त्री के लिए घर की चहारदीवारी भी सुरक्षित नहीं है। दहेज उत्पीड़न, यौन शोषण, गार्हिक कलह पति का परस्त्रीगमन इत्यादि। किसी भी प्रकार की यातना हर परिवेश की स्त्रियों को झेलनी पड़ती है। चाहे वे शहरी हों या ग्रामीण, शिक्षित हों या अशिक्षित, उच्च वर्गीय हों या निम्न वर्गीय।

किन्तु यह मान लेना कि नारी के प्रति यह अपराध भावना एकाएक पनपी है, न्याय संगत नहीं है। आरम्भिक काल में ही उसे सुरक्षा प्रदान करने के लिए पुरूष उसे अपने संरक्षण में रखा। यकीनन यह एक समझौता रहा होगा। किन्तु समय के साथ पुरूष वर्ग ने उस पर अपना वर्चस्व बनाये रखने के लिए अपने अधिकारों का विस्तार किया और नारी को कर्तव्यों की बेड़ियों में बाँध दिया। निजी स्वार्थवश तथा निजी वर्चस्व बनाये रखने के लिए पुरूष ने नारी को स्वयं से हीनतर स्थापित किया। प्राचीन सिन्धु सभ्यता से प्राप्त मातृ देवी की मूर्तियां मातृसत्तात्मक परिवार को परिलक्षित करती हैं। जिसके अनेक उदाहरण आज भी पूर्वोत्तर राज्यों असोम, केरल आदि में पाये जाते है। ऐसे परिवारों की मुखिया नारी होती है। गृहस्थी का पूर्ण संचालन नारी द्वारा ही किया जाता है। वंश परंपरा उसी के नाम से चलती है, जो इस बात का प्रतीक है कि नारी अतीत में पूज्य रही होगी। इसके स्पष्ट उदाहरण ऋग्वेद के प्रारम्भिक मंत्रों में उसकी शक्ति, सामर्थ्य और अधिकारों का वर्णन है। पुत्री की हैसियत से पिता की संपत्ति इसका हक है। युवती की हैसियत से वह अपना पति चुन सकती है और पुरूषों की तरह शस्त्र युद्ध और शास्त्रार्थ आदि का भी परिचालन करने में समर्थ है।

अध्ययन का उद्देश्य

स्त्री की सामाजिक स्थिति के बदलते स्वरूप का अध्ययन करना ।

काल की बदलती गतिविधियों ने नारी की सत्ता को समाप्त कर उसे पराधीन और पराश्रित बना दिया। सीमोन द बोउवार का कथन "स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि उसे बना दिया जाता है" भी इस बात की पुष्टि करता है। इसके लिए पुरुष ने अपनी सुविधा अनुसार कई प्रपंच भी रचे। फलतः स्त्री अपने अधिकारों को खोती हुई पुरूष सत्ता के अधीन जीवन व्यतीत करना अपनी नियती समझने लगी और पुरूष इसका लाभ लेता रहा। संम्भवतः स्त्री भी अपने आप को दर्पण के सम्मुख रख अपनी नकली क्षमता देहयष्टि को सजाने सँवारने और पुरूष के समक्ष उसे परोसने में ही अपनी भलाई, प्रतिष्ठा समझने लगी। किन्तु बदलते हुए परिवेश में यूरोपीय देशों ने इस क्षेत्र में भूचाल ला दिया। उसने नारी को उसकी अहमियत बताई और उसकी दुर्बलताओं पर प्रकाश डाला।

महान फ्रान्सीसी क्रान्ति के प्रणेता जॉ ऑन्तुआ कोन्दोर्से ने अपना नवीन विचार प्रस्तुत किया। उसने धर्म की आलोचना, अन्धविश्वासों का विरोध और वैज्ञानिक प्रभाव पर प्रकाश डाला। सत्तासीन बुर्जुऑ नवजागरण कालीन आदर्शो को छोड़ जनता के साथ विश्वासघात करने लगे। इसी समय फ्रान्सीसी दार्शनिक और प्रत्यक्षवाद के प्रवर्तक अगस्त काम्ट ने सामाजिक संरचना की व्याख्या करते हुए कहा कि ''स्त्री समुदाय की असमानता पूर्ण सामाजिक स्थिति का मूल कारण स्त्री शरीर की प्राकृतिक दुर्बलता में निहित हैं। स्त्रियाँ स्वाभाविक एवं प्राकृतिक तौर पर पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, प्रजनन और शिशुपालन आदि के लिए ही बनी हैं और कभी भी सामाजिक तौर पुरूषों के समकक्ष नहीं हो सकतीं।''

19वीं सदी के प्रारम्भिक तीन दशकों के दौरान यूरोप में सक्रिय स्त्रीमुक्ति आन्दोलन की लेखिकाओं में–– ''अन्ना सीवार्ड, हेलेन मारिया विलयम्स, मेरी हेज, अन्ना बार्बोल्ड, जोआन्ना बेली, हन्नामोर, मेरी राबिन्सन, हेनी बर्नी, जेन टेलर, मेरीलैम्ब, मेरी रसल, क्लेयर क्लेयर माण्ट, आदि प्रमुख है। ये लेखिकायें स्त्री शिक्षा, स्त्रियों की पारिवारिक, सामाजिक स्थिति आदि प्रश्नों को उठाते हुए एक ओर जहाँ मेरीबोस्टन क्राफ्ट की परम्परा को आगे बढ़ा रही थीं वहीं दूसरी ओर उनके लेखन में स्त्री समुदाय की मुक्ति– आकांक्षाओं को विश्वसघाती ढंग से कुचल देने वाली बुर्जुऑ वर्ग सामाजिक राजनैतिक वर्चस्व के प्रति रूढ़िवादी एवं प्रगतिवादी दोनों ही प्रतिक्रियायें नजर आती हैं।

चार्ल्स फुरिये की तो यह मान्यता थी कि ''किसी भी समाज की आजादी का एक बुनियादी पैमाना यह है कि उस समाज विशेष में स्त्रियाँ किस हद तक आजाद हैं।'' जुलाई 1848 एक सुनिश्चित कार्यक्रम के आधार पर स्त्रीवादी आन्दोलन का प्रस्थान–बिन्दु बना। इसी समय सेनेका फाल्स न्यूयार्क में एलिजाबेथ कैण्डी स्टैण्डन और लूकेसिया कफिन मोण्ट आदि की पहल पर प्रथम स्त्री अधिकार कांग्रेस का आयोजन हुआ और स्त्री स्वतंत्रता का घोषणा पत्र जारी किया गया। जिसमें पूर्ण कानूनी समानता, पूर्णतः समान शैक्षिक एवं व्यवसायिक अवसर, समान वेतन, मजदूरी करने का अधिकार तथा वोट देने की माँग की गई।

पुरूष कितना निर्मम और कठोर है, इसका वर्णन करते हुए तसीलमा नसरीन ने लिखा है– ''नारी तुम जो मुँह के बल पड़ी हुई हो, तुम्हारे सारे बदन में पुरूष के पैने दाँतों के निशान हैं। तुम्हें सूँघने के लिए आया हुआ एक कुत्ता भी दर्द के मारे नीला पड़ पायेगा। तुम्हे देखने के लिएआये हुए कौवे चील भी अपने नाखून दिपायेंगे और तुम्हे फिर से कोई काटे तो वह कोई सूअर नहीं, कोई काला नाग नहीं, कोई पुरूष ही होगा। वह देखों, वे तुम्हें नोच खाने आ रहे हैं, वे तुम्हे चखने आ रहे है, फाड़ने आ रहे है, वे मृत्यु का दूसरा नाम हैं। वे विभित्सता का एक और नाम हैं। वे तुम्हे लीलने आ रहे है, चाटने आ रहे है, तुम्हे दलने आ रहे है, वे पुरूष हैं, मनुष्य नहीं है।

भारत में स्त्री विमर्श पाश्चात्य चिन्तन की देन है। दलित चिन्तन का सूत्र तो बौद्ध धर्म में मिल जाता है लेकिन स्त्री विमर्श का सूत्र वहाँ से नहीं जुड़ता। यद्यपि बौद्ध धर्म में स्त्रियों को बराबरी का दर्जा दिया गया है और उन्हें स्वतंत्रता, समानता, बन्धुत्व व न्याय भी मिला था, मगर बौद्ध धर्म के पतन के बाद यह अधिकार छिन गया और वह पुनः ऑचल में दूध और ऑखों में पानी भरकर पुरूष के पग तल में गुलाम की तरह रहने पर विवश हो गई।

भारतीय समाज में चरित्र और नैतिकता दुनिया के किसी गैर कानूनी, अमानवीय, निकृष्ट और जघन्य कार्य से नहीं, लिंग प्रयोग से तय होते हैं। स्त्री व्यक्तित्व के बड़े से बड़े गुब्बारे को नैतिक स्खलन की छोटी सी सुई से फोड़कर ध्वस्त किया जा सकता है। बड़ी से बड़ी सती साध्वी को आप चरित्रहीन कहिये और गोली मार दीजिए–समाज आपकी मर्दानगी के साथ होगा।

स्त्री विमर्श भारतीय साहित्य का नया बिम्ब है। भारत की लगभग सभी भाषाओं में स्त्री विमर्श लिखा जा रहा है। यह बंजर और बेजुबॉ जमीन की बुलन्द आवाज है। यह आवाज साहित्य को नया आयाम दे रही है, विशाल और उदात्त बना रही है।

भारतीय स्त्री ने सचमुच वह मुकाम छू लिया है, जिसे अभी दो दशक पहले तक सपना समझा जाता था। हॉलाकि तब तक भारत एक महिला प्रधानमंत्री के उदय एवं शहादत का पर्याय बन चुका था, लेकिन वह एक ऐसी क्रांति थी, जो समाज के आग जीवन से पराई लगती थी।

इसी भारत के आकड़े हैं कि 49 लाख लड़कियॉ 18 साल की उम्र से पहले ब्याह दी गई हैं। अशिक्षा, कुपोषण, भेदभाव, बीमारी हर निगेटिव लिस्ट में वे अव्वल होती हैं, लेकिन गॉव ही क्यों, इस मामले में तो महानगर भी तो दो दुनियाओं में बँटा हुआ है। हाल में देश के पॉच महानगरों के सर्वेक्षण के बाद पता चला कि दिल्ली और मुम्बई जैसे मेट्रोपोलिटन में एक तिहाई कामकाजी महिलाएँ गहरी असुरक्षा की शिकार हैं। कोलकाता में वे ईव टीजिंग के खौफ में जीती हैं, तो दिल्ली और मुम्बई में दूसरे भेदभाओं से जूझती हैं। यकीनन वे आगे बढ़ रही हैं, लेकिन इसके लिए उन्हें किसी पुरूष के मुकाबले कहीं ज्यादा श्रम करना पड़ता है, और निराशाएँ भी उतनी ज्यादा हैं।

महात्मा बुद्ध, मार्टिन लूथर और नानक की परंपरा को आगे बढ़ाने वाले ज्योतिबा राव फूले ने ब्राम्हण महिलाओं के मुण्डन निषेध, धोखा खायी विधवाओं की गुप्त प्रसूति, उनके अवैध बच्चों का पालन, सती व देवदासी प्रथा का घोर विरोध किया। स्त्री शिक्षा से सदियों की गुलामी से निजात और समानता की कल्पना से स्फुरित स्त्री वर्ग सामाजिक समानता के लिए आवाज उठायेगी। इस उद्देश्य से शिक्षा और समानता का परचम उन्होंने सन् 1848 में फहराया और स्त्री को शिक्षा प्रदान करने का संकल्प किया।

राजेन्द्र यादव ने स्त्री विमर्श के केन्द्र में अवस्थित स्त्री पर विचार करते हुए लिखा है–"स्त्री" हमारी अंश और विस्तार है। वह हमारी ऐसी जन्मभूमि है जिसे हमने अपना उपनिवेश बना लिया है। हमारी सोच और संस्कृति के सारे सामंती और साम्राज्यवादी मूल्य उपनिवेशों के आधिपत्य और शोषण को जायज ठहराने की मानसिकता से पैदा होते हैं। बीसवी सदी के उत्तरार्द्ध में

दुलिया भर से जो उपनिवेश भौतिक और मानसिक रूप से स्वतंत्र हुए, उनमें स्त्री नाम का उपनिवेश भी है। दलित हमारे घर और बस्तियों से बाहर होता है। स्त्री हमारे भीतर है, इसलिए उनका संघर्ष ज्यादा जटिल है।

आज समाज में एक दुरभिसंधि दिखायी दे रही है– स्वतंत्रता के नाम पर केवल देह की स्वतंत्रता। एक पति से क्यों बंधे रहें? विदेशों की तरह अनेकों पति बदलते रहिये, पर अन्त में क्या मिलेगा? मोहन राकेश ने आधे–अधूरे में लिख दिया कि कोई भी आदमी पूर्ण नहीं है। साहित्य में आंसुओं का वर्णन भी बहुत है। स्त्रियां युगों से रोती आ रही है। जितना वे रोती हैं, स्त्री होती जाती हैं। रोकर के स्त्री होनेका क्या मतलब है? स्त्रियां दिल से जीती हैं, दिमाग से जीने की जरूरत है। पूरा स्त्री विमर्श इस ओर संकेत करता है कि स्त्रियों में बौद्धिकता आनी चाहिये, चिन्तन आना चाहिये। जिस दिन स्त्री चिन्तन शील हो गयी तो उसे ठगने की क्षमता किसी में नहीं होगी।

स्त्रियों के उत्पीड़न का इतिहास उतना ही पुराना है जितना असमानता और उत्पीड़न पर आधारित सामाजिक संरचनाओं के उद्‌भव और विकास का इतिहास। प्राचीन साहित्य में ढेरों मिथक और कथायें मौजूद हैं जो पुरूष स्वामित्व की सामाजिक स्थिति के विरूद्ध स्त्रियों के प्रतिशोध और विद्रोह का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। स्त्रियों की दासता और दोयम दर्जे की सामाजिक स्थिति का कई पुरूष विचारकों ने प्राचीन काल से साहसिक तर्कपूर्ण प्रतिवाद किया है।

निष्कर्ष

व्यक्ति सत्य ही समष्टि सत्य है इसलिए पर्सनल इज पॉलिटिकल। समता, स्वतंत्रता और भाईचारा–ये सारे प्रजातांत्रिक मूल्य स्त्रियों की दृष्टि से नये मूल्यांकन की अपेक्षा रखते हैं। विज्ञान, नृशास्त्र, और मनोविज्ञान – सम्बन्धी नये अन्वेषण, जो तथ्य सामने रखते हैं, उनसे स्त्री विमर्श को बहुत बल मिलता है। स्त्रियों की अपनी स्वतंत्र यौन–सत्ता है, जो किसी कैस्ट्रेशन कॉम्पलेक्स से पीड़ित नहीं और यौन सुख के लिए पुरूषों की मुखापेक्षी भी नहीं। स्त्री विमर्श यह विश्वास रखता है कि दूसरे की दृष्टि से स्वयं को देखना और अपना दृष्टिकोण मार्जित करना संभव है।

फेमिनिष्टि ऑण्टोलॉजी का अर्थ है, स्त्री के अनुभूति मण्डल के आलोक में घटनाओं का विश्लेषण, पुरूषों में स्त्री की नजरिया विकसित कर उसे अर्द्धनारीश्वर की गरिमा देना। स्त्री विमर्श एक ऐसा विमर्श है, जो वर्ग, नस्ल, राष्ट्र आदि की संकुचित सीमाओं के पार जाता है और जहॉ कहीं दमन, शोषण, उत्पीड़न है चाहे जिस वर्ग, नस्ल की स्त्री त्रस्त है, वह अपने परचम के नीचे लेता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, राजेन्द्र यादव।*
2. *हिन्दी साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, डा0 विनय कुमार पाठक।*
3. *समकालीन कथा साहित्य में स्त्री विमर्श, प्रो0 प्रकाश कृष्णदेव।*
4. *उत्तर दर्शन, 2003 कपिलदेव चौहान।*
5. *आदमी की निगाह में औरत, राजेन्द्र यादव।*
6. *स्त्री विमर्श का सौन्दर्यशास्त्र, डा0 इन्द्रबहादुर।*
7. *औरत के हक में, तसलीमा नसरीन।*
8. *समकालीन हिन्दी कथा– लेखिकाएँ, डा0 रामकली सर्राफ।*
9. *स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का समाज सापेक्ष्य अध्ययन, डा0 कीर्तिकेसर।*
10. *मार्क्सवाद और हिन्दी कहानी, डा0 सुधाकर गोकाककर।*
11. *कामकाजी भारतीय नारी, प्रेमिला कपूर।*
12. *साठोत्तर महिला कहानीकार, डा0 मधु सन्धु।*
13. *स्त्रियों की पराधीनता, जॉन स्टुअर्टमिल।*
14. *औरत अस्तित्व और अस्मिता, अरविन्द जैन,*
15. *स्त्री विमर्शः सत्ता और समर्पण, पेज नं0 101 से 103*
16. *स्त्री विमर्शः विविध पहलू, कल्पना वर्मा*